ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218
PP. No.- 50-53
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-17, No.- I, Issues-31, YEAR- Jan.-March-2024

आधुनिक समाज में फैशन का बदलता स्वरूप : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन (सोबन सिंह जीना परिसर अल्मोड़ा की छात्राओं के विशेष सदर्भ में)

प्रतिभा पंत
शोध अध्येत्री– कुमांऊ विश्वविद्यालय, नैनीताल, ग्राम–बना, पो0 आ0– त्रिपुरादेवी, जिला–पिथौरागढ़ (उत्तराखण्ड), भारत

Received-05.01.2024, Revised-12.01.2024, Accepted-18.01.2024 E-mail: pratibhapth@gmail.com

सारांश: ***फैशन का समाज पर प्रभाव व्यक्ति की सामाजिक स्थिति पर निर्भर करता है। फैशन विशेष रूप से वस्त्र, जेवरात, सौंदर्य उत्पादों आदि के उपयोग और पहनावे से संबंधित है, जिससे व्यक्ति की सामाजिक–सांस्कृतिक प्रतिष्ठा बढ़ती है। व्यक्ति का पहनावा, बाल सवारने का तरीका, सौंदर्य प्रसाधन का उपयोग व्यक्ति के अन्दर आत्मविश्वास को बढ़ाता है और उन्हें खुद को व्यक्त करने का माध्यम प्रदान करता है। फैशन विश्वभर में अनेक प्राकृतिक और सांस्कृतिक विविधताओं को प्रतिबिम्बित करता है और इसमें समय–समय पर परिवर्तन होता रहता है। संस्कृति एवं समाज में घनिष्ठ संबंध है, क्योंकि संस्कृति वंशानुक्रम द्वारा निर्मित नहीं होती है, बल्कि संस्कृति पर्यावरण का मानव निर्मित भाग है। अर्थात् मिट्टी, वायु पानी, पहाड़ की संस्कृति नहीं है बल्कि इनके द्वारा भौतिक व अभौतिक धरोहर संस्कृति है जैसे–मिट्टी से बने बर्तन, मकान, उससे संबंधित ज्ञान–विज्ञान इत्यादि। यह सामाजिक एवं सांस्कृतिक धरोहर सभी परिवर्तनशील है। जिसमें फैशन की गति बड़े–बड़े परिवर्तनों को भी सुलभ बना देती है। जिसका प्रभाव आधुनिक युग में स्पष्ट दिखाई देता है।***

कुंजीभूत शब्द– फैशन, समाज, सामाजिक–सांस्कृतिक प्रभाव, सौंदर्य प्रसाधन, सामाजिक स्थिति, सामाजिक–सांस्कृतिक प्रतिष्ठा।

मानव द्वारा किसी वस्तु, या अन्य सामाजिक गुणों, परिवर्तनों एवं योग्यताओं को अपनाना ही संस्कार हैं। आधुनिक समाज में इसे 'फैशन' की संज्ञा दी जाती है। फैशन का संबंध पर्यावरण के सामाजिक और सांस्तिक संदर्भ से है। माटिका के अनुसार, "लोकप्रिय संस्ति के तत्व तब जुड़ जाते हैं, जब किसी व्यक्ति का रुझान संगीत की किसी शैली की पसंद से जुड़ा होता है – जैसे संगीत, समाचार या साहित्य, फैशन रोजमर्रा की जिंदगी में शामिल हो गया है।" फैशन को न केवल विशुद्ध सौंदर्य के रूप में देखा जाता है बल्कि फैशन तो लोगों के लिए प्रभाव पैदा करने और अपनी राय एवं समग्र कला को व्यक्त करने का एक माध्यम भी है।[1]

रीना ढाका भारतीय डिजाइनरों में से एक हैं जो पिछले 15 वर्षों से भारतीय फैशन जगत का हिस्सा हैं। रीना ढाका को उनकी थीम परियोजनाओं के लिए सबसे ज्यादा जाना जाता है – सरासर पतलून, क्रोचेस, स्ट्रेच जर्सी, ऊनी वस्त्र और मकड़ी के जाले रूपांकनों। उनकी विशेषज्ञता पश्चिमी पहनावे से शुरू होती है और वह इस वास्तविकता पर विश्वास करती हैं कि उनके काम को विभाजन के रूप में पहना जा सकता है। साथ ही वह अपनी मौलिकता के अनुरूप होने में विश्वास रखती थी। उन्होंने इलास्थान के लिए हौज़ खास विलेज में एक स्टूडियो खोला। अंतर्राष्ट्रीय फैशन पत्रिकाएँ 'वोग' और 'एले' ने उनके काम को उद्धृत किया है।[2]

साहित्य पुनरावलोकन– किसी भी शोध के लिए सम्बंधित विषय पर पूर्व में किये गये कार्यों को गहनता से जानना अनिवार्य व आवश्यक होता है जिसके लिए साहित्य पुनरावलोकन को आधार बनाया गया है। विभिन्न विद्वानों ने समय–समय पर अपने शोध व शोध पत्रों के आधार पर फैशन को स्पष्ट करने का प्रयास किया है।

फैशन डिक्शनरी में कहा गया है कि "फ़ैशन" का उपयोग अक्सर कपड़ों में वर्तमान शैली के पर्याय के रूप में किया जाता है, हालाँकि समाजशास्त्री और अन्य विद्वान जो फ़ैशन के बारे में लिखते हैं, वे ऐसी परिभाषा का उपयोग करने की अधिक संभावना रखते हैं जो कहती है कि फ़ैशन में दो तत्व होते हैं। इसे (1) कई लोगों द्वारा स्वीकार किया जाता है, और (2) इसकी स्वीकृति अपेक्षाकृत कम समय के लिए रहती है। फैशन सभी संस्कृतियों और ऐतिहासिक कालखंडों में मौजूद नहीं है। ऐसा प्रतीत होता है कि इसकी शुरुआत पश्चिमी यूरोप में मध्य युग के अंत में हुई थी। उस समय कुलीन वर्ग फैशन के प्रवर्तक थे, और निम्न वर्ग ने उच्च वर्ग की शैलियों की नकल की (जिसे "फैशन के ट्रिकल डाउन सिद्धांत" के रूप में जाना जाता है)। आज, फैशन की उत्पत्ति समाज के सभी स्तरों पर हो सकती है, यहां तक कि सबसे कम समृद्ध लोगों में भी, और जब ऐसा होता है, तो इसे "परकोलेट अप" या "बॉटम अप" फैशन परिवर्तन के रूप में जाना जाता है।[3]

रवीन्द्रनाथ मुखर्जी ने अपनी पुस्तक सामाजिक नियंत्रण और सामाजिक परिवर्तन पुस्तक में फैशन को परिभाषित करते हुए लिखा है कि लोग फैशन का अर्थ मानव व्यवहार के उस परिवर्तनशील ढंग से लगाते है जोकि पोशाक और केश विन्यास से संबंधित होता है पर वास्तविकता यह नही है। यथार्थ अर्थ में फैशन उन सभी परिवर्तनशील व लोकप्रिय व्यवहार के तरीको को कहते है जोकि पोशाक, केश–विन्यास, विश्वास, मनोरंजन, संगीत, श्रृंगार, साहित्य आदि के क्षेत्र में प्रचलित हो जाते हैं और जिन्हें लाभ–हानि की भावना से नहीं वरन् नवीनता की इच्छा की संतुष्टि के लिए अपनाया जाता है।[4]

Dr. D. Saravanan & Mr. Nithyaprakash. अपने शोधपत्र FASHION TRENDS AND ITS IMPACT ON SOCIETY में स्पष्ट किया है कि फैशन किसी कार्य को पूरा करने के लिए अच्छे पुराने मूल्य की एक महत्वाकांक्षी अनुमानित छवि नहीं है, बल्कि यह एक विचारोत्तेजक अवधारणा है, जो समाज की सराहना के लिए चित्रित होने योग्य है, जो हमें और भी अधिक सहज बनाती है। हम कैसे दिखते हैं और कैसा महसूस करते हैं, इसे पोशाक में इंटरैक्टिव उपकरणों के माध्यम से अपने भावनात्मक अनुभवों को व्यक्त करना चाहिए। फैशन प्रवृत्ति की सफलता इस बात में निहित है कि समाज फैशन प्रवृत्ति की व्याख्या एवं उसका मूल्यांकन कैसे करता है। इसलिए प्रभाव को सामाजिक स्वीकृति के बैरोमीटर द्वारा मापा जाता है जो बदले में कई प्रेरक शक्तियों द्वारा संचालित होता है जो लोगों के मूल्यों और व्यवहार संबंधी गुणों को रेखांकित करता है।[5]

अनुरूपी लेखक / संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-17, No.- I, Issues-31, YEAR- Jan.-March-2024

अध्ययन के उद्देश्य– किसी भी शोधकार्य हेतु शोधकर्ता को कुछ उद्देश्य को लेकर चलना होता है, जिससे शोध को एक गति प्रदान की जा सके। अतः प्रस्तुत् शोध हेतु निम्न उद्देश्यों को शोध हेतु लिया गया है–

युवाओं के बीच प्रचलित फैशन रूझानों की पहचान करना। सामाजिक अंतक्रियाओं और रिश्तों पर फैशन के प्रभाव की जांच करना।

शोध अभिकल्प– प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य अन्वेषणात्मक है। अतः शोध हेतु इस अध्ययन में अन्वेषणात्मक एवं विवेचनात्मक शोध अभिकल्प का प्रयोग किया गया है। समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से फैशन एक मनोवैज्ञानिक तथ्य है जिसका संबंध मानवीय व्यवहारों में नवीनता एवं परिवर्तनशीलता का समावेश करने हेतु अनेक मनोभावों की संतुष्टि करने से है जिसमें आधुनिक सोच, औद्यौगिकरण, पाश्चात्य मूल्यों का बढ़ता हुआ प्रभाव तथा नवीन संचार साधनों के कारण फैशनगत व्यवहार अत्यंत प्रभावित हुआ है। अतः फैशन का मनोवैज्ञानिक तर्क, विश्लेषणात्मक स्वरूप तथा मानवीय मनोभावों पर फैशन के प्रभाव को जानना अतिआवश्यक है। हालांकि इस प्रकार अनेक अध्ययन हैं, किन्तु फैशन से पड़ने वाले प्रभाव को ध्यान में रखकर मुख्य रूप से अन्वेषणात्मक शोध अभिकल्प ही प्रस्तुत अध्ययन के लिए उपयुक्त समझा गया। अन्वेषणात्मक दृष्टिकोण से सामाजिक जीवन पर पडने वाले प्रभाव के संदर्भ में फैशन के प्रति छात्राओं के बदलते दृष्टिकोण एवं उनमें होने वाले परिवर्तन की एक समाजशास्त्रीय व्याख्या प्रस्तुत की जायेगी। प्रस्तुत अध्ययन सोबन सिंह जीना परिसर, अल्मोड़ा मे कला संकाय (बी0 ए0 प्रथम, द्वितीय व तृतीय वर्ष) में अध्ययनरत् स्नातक की छात्राओं के संदर्भ मे अध्ययन करना है।

प्रस्तुत अध्ययन निदर्श पर आधारित है। प्रस्तुत अध्ययन के लिए कला संकाय में अध्ययनरत् स्नातक की छात्राओं को अध्ययन में सम्मिलित किया गया है, जिसमें स्नातक प्रथम, द्वितीय व तृतीय वर्ष में क्रमशः 355, 450, 306 छात्राएं अर्थात् 1111 छात्राएँ अध्ययन करती हैं। किंतु संख्या ज्यादा होने के कारण अध्ययन हेतु इन्हें समग्र रूप में सम्मिलित नहीं किया जा सकता।

अतः अध्ययन हेतु दैव निदर्शन पद्धति का उपयोग कर निदर्श के रूप में प्रथम, द्वितीय व तृतीय वर्ष में 10 प्रतिशत छात्राओं को समानुपातिक आधार पर क्रमश 36, 45, 30 छात्राओं अर्थात् कुल 111 छात्राओं को अध्ययन हेत चयनित किया गया है। यह चयन लाटरी पद्धति द्वारा किया गया है। इस प्रकार प्रस्तुत अध्ययन में कुल 111 छात्राओं को अध्ययन में सम्मिलित किया गया है। अध्ययन मुख्य रूप से प्राथमिक आँकड़ों पर आधारित होगा तथा आंकड़ें एकत्रित करने के लिए मुख्य रूप से साक्षात्कार अनुसूची तथा आवश्यकतानुसार, असहभागी अवलोकन पद्धति का उपयोग किया गया है।

फैशन का सामाजिक प्रभाव– यह सर्वविदित है कि आज फैशन के पीछे भागने की लालसा युवाओं के मन में प्रबल है। जिसे वह अपने जीवन की अनिवार्य आवश्यकताओं के रूप में स्वीकार करता है। क्या अध्ययनरत् छात्राओं की सोच भी ऐसी ही है को जानने के लिए उनसे पूछा गया कि आज का युवा फैशन के पीछे भागता है जिसमे 87.40 प्रतिशत का उत्तर हां तथा 12.61 प्रतिशत विद्यार्थियों का उत्तर नहीं में था। जैसा कि निम्न सारणी से स्पष्ट होता है–

फैशन के पीछे भागने के संदर्भ में उत्तरदाताओं के विचार

सारणी संख्या –1

युवाओं का दृष्टिकोण	हाँ	नहीं	योग
आवृत्ति	97	14	111
प्रतिशत	87.40%	12.61%	100

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि अधिकांश छात्राओं ने स्वीकार किया है कि आज का युवा फैशन के पीछे भाग रहा है। युवाओं का पहनावा समयानुसार परिवर्तित होता रहता है। स्वयं को विशेष व स्मार्ट दिखाने की ललक में पारिवारिक सदस्यों द्वारा परम्परागत वेशभूषा या पहनावे के विषय में किसी प्रकार की चर्चा उन्हें अपने समय की बर्बादी लगती है। उसे वहीं पहनावा सर्वप्रिय होता है जो समय की मांग होती है, क्योंकि उनके अनुसार बदलता पहनावा फैशन का प्रमुख अंग है और उसके साथ न चलना उनका पिछड़ापन, इस विषय में छात्राओं ने अपने विचारों की अभिव्यक्ति निम्नवत् की है–

बदलते पहनावे को फैशन के अंतर्गत मानने के संदर्भ में उत्तरदाताओं के विचार

सारणी संख्या–2

छात्राओं की सोच	हाँ	नहीं	योग
आवृत्ति	87	24	111
प्रतिशत	78.38%	21.62%	100

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि सर्वाधिक छात्राएं मानती हैं कि वर्तमान समय में बदलते पहनावे को फैशन के अंतर्गत माना जा सकता है। जिसका प्रतिशत 78.38 है जबकि 21.62 प्रतिशत ऐसी छात्राएं भी हैं जो इससे सहमत नहीं हैं।

यदि आज सामाजिक सांस्कृतिक विघटन का मूल्यांकन करें तो उसमें फैशन की अहम् भूमिका रही है। हमारी संस्कृति, सभ्यता, नैतिकता इस फैशन के कारण लुप्त होती दिखायी पड़ रही है, जिसके परिणाम घातक होंगे। हम अपनी भाषा, अपने रीति–रिवाजों को छोड़ पश्चात्य संस्कृति की ओर भाग रहे हैं और अपनी सभ्यता से दूर होते जा रहे हैं। इस विषय में चयनित उत्तरदाताओं की अभिव्यक्ति

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-17, No.- I, Issues-31, YEAR- Jan.-March-2024

निम्नवत् है :

अपनी सभ्यता को भूलने के संदर्भ में उत्तरदाताओं के विचार
सारणी संख्या–3

सभ्यता को भूलना	हां	नहीं	कह नहीं सकते	योग
आवृत्ति	74	22	15	111
प्रतिशत	66.66%	19.81%	13.53%	100

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि केवल 13.53 प्रतिशत छात्राएँ कुछ कहने की स्थिति में नहीं थी, जिनका उत्तर पता नहीं में प्राप्त हुआ। 66.66 प्रतिशत छात्राओं का मानना था कि वास्तव में फैशन की दौड़ में हम अपनी सभ्यता को पीछे छोड़ते जा रहे हैं। जबकि 19.81 प्रतिशत छात्राओं ने माना है कि ऐसा कुछ नहीं है।

कई बार इस इस विषय की चर्चा–परिचर्चा होती है कि आज का पहनावा जिसे हम फैशन मानते हैं, अपराधिक प्रवृत्तियों को जन्म देता है। यूं तो हर व्यक्ति को अपनी स्वतंत्र जिन्दगी जीने का अधिकार होता है, लेकिन कभी–कभी इस बात से भी इंकार नहीं किया जा सकता है कि अपराधिक घटनाओं के लिए आधुनिक फैशन परस्त परिधान कारण बन जाते हैं छात्राओं की अभिव्यक्ति को निम्न सारणी द्वारा स्पष्ट किया गया है।

फैशनेबल कपड़े अपराधिक प्रवृत्ति को जन्म देते हैं के संबंध में उत्तरदाताओं के विचार
सारणी संख्या–4

दृष्टिकोण	पूर्ण सहमत	आंशिक सहमत	असहमत	योग
आवृत्ति	22	77	12	111
प्रतिशत	19.81%	69.36%	10.83%	100

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि 69.36 प्रतिशत सर्वाधिक छात्राएँ आंशिक सहमत हैं, जो मानती है कि फैशन के अंतर्गत पहने जाने वाले कपड़े अपराधिक प्रवृत्तियों को जन्म देते हैं। 10.83 प्रतिशत छात्राएँ इससे असहमत हैं, लेकिन 19.81 प्रतिशत छात्राएँ पूर्ण रूप से इस बात से सहमत हैं कि आधुनिक फैशन परस्ती परिधान आपराधिक प्रवृत्ति को जन्म देने का कारण है।

जहां वैज्ञानिकता की बात करते हैं वहां धर्म का महत्व कम प्रतीत होने लगता है। यही कारण है कि आज प्राचीन परम्पराओं का अस्तित्व कम होता जा रहा है। नवीन परम्पराएं हमारी प्राचीन परम्पराओं पर हावी होती जा रही हैं। क्या छात्राएँ इससे सहमत हैं के संबंध में विचारों की अभिव्यक्ति निम्नवत् हुई है।

परम्परा एवं रीति–रिवाजों को मानने के संदर्भ में उत्तरदाताओं के विचार
सारणी संख्या–5

सहमत	हाँ	नहीं	कह नहीं सकते	योग
आवृत्ति	59	38	14	111
प्रतिशत	53.15%	34.23%	12.61%	100

उपरोक्त सारणी में अधिकांश 53.15 प्रतिशत छात्राएं मानती हैं कि बदलता फैशन हमारे रीति–रिवाज धर्म, परम्परा को धीरे–धीरे नष्ट कर रहा है। 34.23 प्रतिशत इससे असहमत तथा 12.61 प्रतिशत प्रतिशत कह नहीं सकते, की स्थिति में पायी गयी। जैसा कि उपरोक्त सारणी में दर्शाया गया है।

पीढ़ियों के बीच का अंतराल दिन, प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। वर्तमान नवीन संसाधन व उपकरणों ने पीढ़ियों के बीच एक खाई सी पैदा कर दी है। जहां बुजुर्ग या अभिभावक युवाओं को संस्कारिता का पाठ पढ़ाते दिखायी पड़ते हैं, वहीं युवाओं में विरोधी भावना की प्रबलता स्पष्ट परिलक्षित होती हैं। युवा पुरानी बातों को स्वीकारने को तैयार नहीं और बुजुर्ग नयी संस्कृति से सामन्जस्य स्थापित करने में असमर्थ दिखायी पड़ते हैं। अतः तनाव की स्थिति उत्पन्न हो रही है और पीढ़ियों के मध्य दूरियां बढ़ती जा रही हैं, जिसका कारण आधुनिक फैशन है। क्या छात्राएं इससे सहमत हैं, जानने के लिए पूछे गये प्रश्न की अभिव्यक्ति निम्नवत् हुई है–

पीढ़ियों के बीच बढ़ते अंतराल के संबंध में उत्तरदाताओं के विचार
सारणी संख्या–6

छात्राओं का दृष्टिकोण	हाँ	नहीं	कह नहीं सकते	योग
आवृत्ति	71	20	20	111
प्रतिशत	63.96%	18.01%	18.03%	100

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-17, No.- I, Issues-31, YEAR- Jan.-March-2024

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि 63.96 प्रतिशत छात्राएँ मानती हैं कि फैशन के कारण न केवल मानसिक तनाव बल्कि पीढ़ियों के बीच दूरियां काफी बढ़ रही है। 18.01 प्रतिशत छात्राओं का मानना है, ऐसा कुछ नहीं है, जबकि 18.03 प्रतिशत छात्राएँ कुछ कह नहीं सकते में अपना उत्तर प्रस्तुत करती हैं।

निष्कर्षतः यह ज्ञात होता है कि फैशन का प्रभाव इस कदर है कि उससे हमारा निजी जीवन भी प्रभावित हुआ है। वहीं शारीरिक, मानसिक तनाव भी बढ़े हैं, जिसको छात्राओं ने भी माना है।

भारतीय समाज के संदर्भ में आधुनिकीकरण की अवधारणा का विशेष महत्व है, क्योंकि भारत एक परम्परागत समाज रहा है और अंग्रेजी शासन स्थापित होने से पहले बहुत कुछ यही स्थित बनी हुई थी। आज केवल भौतिक प्रगति को आधुनिकीकरण माना जाता है। किसी समाज में परम्परागत मूल्यों, विश्वासों तथा कार्य पद्धतियों में परिवर्तन को आधुनिकीकरण कहा जाता है। इस संदर्भ में छात्राओं से जानने का प्रयास किया गया कि आज के फैशन पर आधुनिकीकरण का प्रभाव है। प्रत्युत्तर निम्नवत् है :–

फैशन पर आधुनिकीकरण का प्रभाव पड़ने संबंधित सारणी :

सारणी संख्या–7

आधुनिकीकरण से संबंधित सहमत व सहमत योग

आधुनिकीकरण से संबंधित	सहमत	सहमत	योग
आवृत्ति	93	18	111
प्रतिशत	83.79%	16.21%	100

उपरोक्त सारणी में अधिकांश 83.79 प्रतिशत छात्राएं मानती हैं कि आज का फैशन आधुनिकीकरण का प्रभाव है, जबकि 16.21 प्रतिशत छात्राएँ इससे असहमत दिखायी दी। उनका मानना है कि फैशन आधुनिक नहीं, बल्कि प्राचीन काल से चला आ रहा है, जबकि आधुनिकीकरण एक नयी अवधारणा है।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि फैशन पर आधुनिकीकरण का प्रभाव पड़ रहा है। आधुनिकीकरण होने से फैशन के प्रतिरूप बदले हैं। खान–पान, रहन–सहन पर भी उसका असर हुआ है। साथ ही फैशन में भी वह आधुनिक पुट विद्यमान होने लगा है जिसे छात्राएं स्वीकार करती हैं। फैशन न केवल फैशनेबल कपड़ें पहनने की अनुमति देता है, बल्कि अपनी सोच में भी परिवर्तन लाने का अवसर देता है। अगर परिवर्तन सकारात्मक है तो ये हमारे अंदर आत्मविश्वास को बढ़ाता है इसके विपरीत परिवर्तन नकारात्मक है तो समाजिक तौर पर विरोधाभास भी झेलना पड़ सकता है। एक सीमा तक फैशनेबल होने में कोई बुराई नही है बल्कि फैशन के प्रति जागरूक रहने से लोकप्रियता भी बढ़ती है। वास्तव में, फैशन द्वारा सही सामाजिक–सांस्कृतिक परिवर्तन विश्व के विस्तृत क्षेत्र में व्यक्ति से व्यक्ति को, समूह से समूह को, फिर समाज से अलग करता है।

सुझाव– फैशन का समाज पर प्रभाव बहुत गहरा होता है। यह न केवल हमारे व्यक्तित्व को प्रभावित करता है, बल्कि हमारे समाज की सोच और संस्कृति पर भी असर डालता है। फैशन समाज को स्वास्थ्य, समाजिक समानता, और संचार में सहायक बना सकती है। स्थायी और पर्यावरण के अनुसार फैशन चुनने पर ध्यान देना, सामाजिक संदेश और जागरूकता को बढ़ावा देना समाज में सकारात्मक परिवर्तनों को प्रोत्साहित कर सकता है।

लड़कियों पर फैशन का प्रभाव गहरा होता है। उन्हें स्वतंत्रता, आत्मविश्वास, और सामाजिक रूप से स्वीकृति मिलती है। उन्हें समय के साथ स्वस्थ और सामयिक फैशन का चयन करने की प्रेरणा देनी चाहिए, तॉकि उन्हें समाज में समानता मिले।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. "Does pop culture influence fashion". www.sundaynews.co.zw. Retrieved 2016-03-07.
2. https://style2designer.com fashion design.
3. https://wwd.com fashion dictionary.
4. मुखर्जी, रवीन्द्रनाथ, सामाजिक नियंत्रण और सामाजिक परिवर्तन, सातवां संस्करण 2002, विवेक प्रकाशन 7–यू0ए0, जवाहरनगर, दिल्ली–110007, पृ0सं0–182.
5. Dr., D. Saravanan & Mr. Nithyaprakash. V, FASHION TRENDS AND ITS IMPACT ON SOCIETY, September 2015,www.researchgate.net/publication/282571020, p.1

*****